माननीय राज्यपाल, हरियाणा प्रो0 कप्तान सिंह सोलंकी द्वारा 3 जून, 2016 को **NITTTR** सेक्टर–26, चण्डीगढ में विकलांगों के लिए आयोजित रोजगार मेले में दिया गया भाषण।

Chairman of Confederation of Indian Industries Chandigarh Council डॉ0 दिनेश दुआ जी, हरियाणा सरकार के अतिरिक्त मुख्य सचिव, समाज कल्याण विभाग श्री एस0 के0 गुलाटी जी, Director of National Institute of Technical Teachers Training & Research डॉ0 एम0 पी0 पुनिया जी, क्वार्क इंडिया प्रा0 लि0 के वरिष्ठ निदेशक श्री सोफी जहूर जी, सार्थक एजुकेशन ट्रस्ट के सी0ई0ओ0 डा0 जितेन्द्र अग्रवाल जी, National Institute of Technical Teachers Training and Research, Chandigarh के डीन डॉ0 जे0 एस0 सैनी जी, विभिन्न कंपनीज से पधारे हुए महानुभाव और इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित मेरे दिव्यांग भाइयो व बहनो!

जो महानुभाव मंच संचालन कर रहे थे वे कह रहे थे कि आपको जिस समय का इंतजार था वह आ गया। आपको तो इंतजार पूरे कार्यक्रम का ही था, मैं ही especially अलग क्यों ? सही समय तो वह होगा जब विभिन्न कंपनीज से आए हुए लोग आपके साथ interaction करेंगे और आपको काम करने के लिए मौका देंगे। इस आयोजन की सफलता भी उसी में है और सही इंतजार भी वही है। मैं कई कार्यक्रमों में जाता हूँ। सब अच्छे लगते हैं, प्रेरणादायी होते हैं, उत्साहवर्धक होते हैं। लेकिन इस आयोजन में उपस्थित होकर मुझे सबसे ज्यादा अच्छा लगा।

इस आयोजन को मैं किस श्रेणी में रखूं ? कार्यों की अलग–अलग श्रेणी होती हैं। एक तो व्यक्ति के व्यक्तिगत कार्य होते हैं, जो वह स्वयं के लिए करता है, वे स्वयं के लिए उपयोगी होते हैं। दूसरी श्रेणी उन कामों की होती हैं जो परिवार के लिए किए जाते हैं। वे परिवार के लिए जरूरी होते हैं। परिवार के लिए जो कार्य करने वाले हैं अगर वे हम नहीं करेंगे तो परिवार ठीक से नहीं चलेगा। और कुछ काम समाज के लिए होते हैं। अब समाज के कामों के लिए, समाज के लिए जो आपका कर्त्तव्य है, वह अगर आप नहीं करेंगे तो समाज से जो आपको मिलना है वह आपको नहीं मिल पाएगा। इसलिए तीसरे प्रकार के काम वे होते हैं जो समाज के लिए होते हैं। मैं सोच रहा था कि यह जो काम किया जा रहा है, इसमें कई भागीदार हैं। Industries सबसे ज्यादा भागीदार हैं जिनकी प्रमुख संस्था सी0 आई0 आई0 है।

National Institute of Technical Teachers Training & Research ने इतना अच्छा अवसर हमें उपलब्ध करवाया है, हम सबको इकट्ठा

किया है। इसके साथ सार्थक एजुकेशन ट्रस्ट और सरकार। ये इतने सारे भागीदार हैं। आज ये जो काम कर रहे हैं, इस काम को मैं किस श्रेणी में रखूं ?

जो काम व्यक्तिगत होते हैं, परिवार के होते हैं, समाज के लिए होते हैं, यह उन तीनों से अलग है। और यह काम ईश्वरीय है। यह Godly है। Godly जो काम होता है वह वास्तव में मानवता की सही पहचान होती है। आप सोच रहे होंगे कि मैने तीनों कामों से अलग इसे क्यों कहा ? इसे Godly मैने इसलिए कहा कि भगवान किसी को अधूरा नहीं बनाते। भगवान किसी को Disability नहीं देना चाहते। प्रत्येक व्यक्ति को परफैक्ट बनाकर भेजना चाहते हैं। सारे अंग–उपांगों से लैस करके भेजना चाहते हैं। लेकिन फिर भी कुछ परिस्थितियाँ ऐसी बनती हैं कि कमी आ जाती है, कोई Disability आ जाती है। उस कमी को, उस Disability को जो पूरा करता है, जिस काम के द्वारा वह पूरी की जाती है, वह भगवान की श्रेणी में आता है या फिर मैं ऐसा कहूँ कि प्रोसेस के दौरान जो गलती भगवान से हो गई, उस गलती को जो पूरी करता है उसको हम क्या संज्ञा दें ? उसको सामान्य श्रेणी में रखें ? सामान्य श्रेणी में रखने की जरूरत नहीं है। That work and those persons who initiate that work, they are next to God. भगवान के बाद उनका दूसरा नम्बर आता है।

इसलिए यह सारा का सारा आयोजन, सारा का सारा कार्यक्रम ईश्वरीय है। जो सहयोगी इसमें लगे हुए हैं, वे वास्तव में भगवान से जो काम अधूरा रह गया था, उसको पूरा करने में लगे हैं। इसलिए मैं इसको कह रहा हूँ ये Godly वर्क है। इसलिए इसको यह कहा है कि यह भगवान का काम है।

कई बार एक बात और होती है कि जो हमे Disability लगती है, जो हमें कमी लगती है, वह कई बार हमारे लिए वरदान बनती है। और हो सकता है कि भगवान की योजना ही यह रही हो। अभी जिसको मैं Disability कह रहा था, हो सकता है भगवान ने हमारी परीक्षा लेने के लिए वह Disability दी हो। या जो काम हमारे लिए नियत किया हो उससे अलग कोई काम करवाने के लिए सोचा हो। इसके कारण वैसी स्थिति बनी हो।

यद्यपि वह challenge है। उस challenge को भी स्वीकार करके ऐसा परिणाम देना जिससे वह उसका boon बन जाए, वह उसका वरदान बन जाए उच्च मनोबल का प्रतीक है। कितने यहाँ पर उदाहरण दिए गए, कितने भाषण किए गए। वे बहुत ही उपयोगी थे, बहुत ही भावुक थे, भावनामय थे।

हमारे डॉ0 जितेन्द्र अग्रवाल, इन्हें तो डॉ0 बनाने की नीयत से ही पाला व पढाया गया था। ये तो डॉ0 बन भी गए थे। लेकिन वे ठीक कह रहे थे कि अगर डॉ0 वो बन जाते तो लोगों के दाँत ही गिनते रहते, दाँत ही देखते रहते। डॉ0

जितेन्द्र अग्रवाल को इतने लोग नहीं जानते थे, जितने आज जानते हैं। इसलिए कोई Disability अगर आई तो उनके लिए वरदान बनकर आई।

लेकिन अगर ये Disability को challenge न मानकर, निराश होकर, मन को हारकर बैठ जाते तो फिर और स्थिति निर्मित होती। अतः वैसा सब कुछ करने के लिए इनको भी अवसर देना चाहिए जिस प्रकार के अवसर हमें मिल रहे हैं।

दिनेश दुआ जी ने भी कितने उदाहरण दिए। वे दिनकर शर्मा जी के बारे में बता रहे थे। उनको world fame मिल गई। कितनी world fame मिली? दिनेश दुआ जी में क्या कमी है, उनमें सब कुछ है, लेकिन उनको इतनी fame नहीं मिली जितनी उनको मिल गई। इसलिए कई बार मुझे ऐसा लगता है कि जो Disability दी जाती है वह भी कभी–कभी boon बनकर आती है, वरदान बनकर आती है।

आज तक मैं CII के कई कार्यक्रमों में आया हूँ। वहाँ पर तो मैने दिनेश दुआ जी को अंग्रेजी में बोलते हुए देखा है। जब आज मैने उन्हें हिन्दी में सुना तो मुझे लगा कि वे हिन्दी में ज्यादा effective बोलते हैं, मर्म को छूते हैं, भावनाओं को छूते हैं और आत्मा को छूते हैं। आपने यहाँ कार्यक्रम में जितने भी भाषण सुने हैं, मुझे लगता है कि आपने सबको ठीक तरह से समझा होगा। आप उन्हें अपने जीवन की पूँजी बनाएंगे, उनके आधार पर आप प्रेरणा लेंगे। जो Disability है उससे निराश न होकर, उसको एक challenge मानकर समाज में एक वरदान के रूप में स्थापित करेंगे।

इस प्रकार Technical Teachers Training Institute ने यह बहुत ही सुंदर काम किया है। यह मानवता का काम है। अन्य संस्थाओं ने उनका सहयोग किया है। आप सबको एक अवसर दिया है। मुझे पता चला है कि इसके पश्चात विभिन्न संस्थानों व industries के जो लोग यहाँ पर आए हैं, वे interaction करेंगे। इतनी अगर सुंदर व्यवस्था की जा रही है और उसमें अगर किसी को चाय नहीं मिली, कोई दिक्कत हुई तो आप क्या इतनी परेशानी सहन नहीं कर सकते? ये अपने परिवार के लिए नहीं कर रहे हैं। ये उस वर्ग के लिए काम कर रहे हैं जो पूरे देश के अंदर 2 करोड़ 68 लाख हैं और यह संख्या बढ़ती चली जा रही है।

इसलिए सरकार, समाज, सामाजिक संस्थाएँ ये अगर आगे आकर इसमें योगदान देती हैं, तो जैसा मैने प्रारंभ में कहा कि यह तीनों प्रकार के कामों से अलग एक ईश्वरीय कार्य है और जो लोग इसे करते हैं उनको बहुत अधिक मात्रा में सहयोग देने की जरूरत है।

Haryana Government के बारे में गुलाटी जी बता रहे थे कि उन्होंने कितना अच्छा काम किया। हर दिव्यांग व्यक्ति को 2000 रूपये, पूरे प्रदेश में 21 करोड़ रूपये 10 तारीख से पहले वितरित करते हैं। यह पैसा उनके खाते में पहुँच जाता है। प्रजातंत्र का सही उद्देश्य ही यही है कि जो आदमी गरीब है, जो पंक्ति में सबसे पीछे खड़ा हुआ है, जिसको अभाव है उसको अगर हमने सुखी नींद सोने की व्यवस्था नहीं की, तो प्रजातंत्र हमारा असफल है। प्रजातंत्र की सफलता ही इसी में है कि किसी व्यक्ति को अगर किसी प्रकार का अभाव, गरीबी है, निरक्षरता है, कोई भी कमजोरी है, बेरोजगारी है इसका संकट उसे नहीं होना चाहिए। उसका निराकरण करने का काम सरकार को करना चाहिए। प्रजातंत्र का मतलब ही यह है। प्रजातंत्र में प्रजा ही दुखी रही तो वह कहाँ का तंत्र है, कहाँ की government है। Good governance का मतलब क्या है ?

लेकिन यह सब केवल सरकार के बल पर नहीं हो सकता। सामाजिक संस्थाओं को, सामाजिक लोगों को जो वास्तव में सही अर्थों में मानव हैं, भगवान ने जिनको क्षमता दी है, पूंजी दी है, सामर्थ्य दिया है, वे उसको भगवान की देन मानकर ऐसे लोगों के लिए दें, उसमें काम करें। यह आज की सबसे बड़ी विशेषता और महानता है।

इसलिए इस प्रकार के आयोजन इस बात को सिद्ध करते हैं कि समाज के अंदर कोई भी आदमी दुखी नहीं रहेगा, कष्ट में नहीं रहेगा, बेरोजगार नहीं रहेगा, वंचित नहीं रहेगा। मैं इस प्रयास के लिए आपकी प्रशंसा करता हूँ और भगवान से प्रार्थना भी करता हूँ के आपे सब बहुत आगे बढ़ें। आप सब लोग जो यहाँ पर बैठे हुए हैं उनको कोई न कोई काम मिले जिससे अपने पैरों पर खड़े हो सकें।

धन्यवाद!